सुसमाचार

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय
पाँच

यूहन्ना रचित सुसमाचार

THIRD MILLENNIUM
MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 4

नोट्स 5

I. परिचय (0:20) 5

II. पृष्ठभूमि (2:11) 5

A. लेखक (2:22) 5

1. पारंपरिक दृष्टिकोण (3:15) 5
2. व्यक्तिगत इतिहास (13:07) 6

B. अवसर (17:40) 7

1. भौगोलिक स्थिति (18:10) 7
2. श्रोता (21:35) 8
3. तिथि (25:28) 8
4. उद्देश्य (30:15) 9

III. संरचना और विषयवस्तु (35:06) 9

A. परिचय (37:17) 10

B. यीशु की सार्वजनिक सेवा (38:31) 10

1. सेवकाई के लिए तैयारी (39:35) 10
2. पहला फसह (44:01) 11
3. बेनाम पर्व (51:06) 11
4. दूसरा फसह (51:45) 11
5. झोपड़ियों का पर्व (53:04) 12
6. समर्पण का पर्व (55:12) 12
7. तीसरा फसह (57:39) 12

C. यीशु की व्यक्तिगत सेवकाई (59:04) 12

1. प्रभु-भोज (1:00:33) 12
2. मृत्यु और पुनरुत्थान (1:09:00) 13

D. निष्कर्ष (1:17:54) 14

IV. मुख्य विषय (1:20:55) 15

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

A. विश्वास करना (1:21:41) 15
B. मसीह् (1:25:05) 15
1. मंदिर (1:28:33) 16
2. पर्व (1:35:15) 17
3. व्यवस्था (1:40:12) 17
C. परमेश्वर का पुत्र (1:46:59) 18
1. दैवीय (1:48:10) 18
2. मानवीय (1:53:17) 18
D. जीवन (1:54:57) 19
V. उपसंहार (2:00:31) 19
पुनर्समीक्षा के प्रश्न 20
उपयोग के प्रश्न 25

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
  - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
  - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
  - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
  - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें** — जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
  - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
  - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
  - उपयोग के प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:20)

II. पृष्ठभूमि (2:11)

A. लेखक (2:22)

यूहन्ना : यीशु के सबसे विश्वस्त साथियों में से एक था, और आरंभिक मसीही समुदाय में विश्वास का स्तम्भ।

यूहन्ना के नए नियम के लेखन :

- यूहन्ना रचित सुसमाचार
- 1, 2 और 3 यूहन्ना
- प्रकाशितवाक्य

1. पारंपरिक दृष्टिकोण (3:15)

पारंपरिक दृष्टिकोण कि प्रेरित यूहन्ना ने इस सुसमाचार को लिखा था, विश्वसनीय है।

- हस्तलेख :
    - पपीरस 75, जिसे "P-75" कहा गया है
    - पपीरस 66, जिसे "P-66" कहा गया है
    - कोडेक्स सिनाईटिकस
    - कोडेक्स वेटिकानस

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- आंतरिक प्रमाण :

    - लेखक के पास यहूदी व्यवस्था का मजबूत ज्ञान था

    - मजबूत प्रमाण कि लेखक एक फिलिस्तीनी यहूदी था

    - यह भाव देता है कि यह एक ऐसे व्यक्ति के द्वारा लिखा गया है जिसने यह सब अपनी आँखों से देखा हो

    - “वह चेला जिसे यीशु प्रेम करता था” : यूहन्ना 21:20-24, 13:23, 19:26-27, 20:2-8, 21:7

- आरंभिक कलीसिया

  इन्होने पुष्टि की कि यूहन्ना ही उसका लेखक था :

    - सिकंदरिया के क्लेमेंट
    - तरतुलियन
    - आयरेनियस

2. व्यक्तिगत इतिहास (13:07)

- यूहन्ना और याकूब : “जब्दी के पुत्र”

- मछुआरा : मरकुस 1:14-21

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- उसकी माता का नाम सलोमी था

- उग्र स्वभाव : मरकुस 3:17

- चेलों के आंतरिक घेरे का सदस्य

- यरूशलेम की कलीसिया का एक स्तम्भ

B. अवसर (17:40)

1. भौगोलिक स्थिति (18:10)

संभावना यह है कि यूहन्ना ने एशिया माइनर में रहने वाले श्रोताओं के लिए इफिसुस से यह सुसमाचार लिखा था।

फिलिस्तीनी यहूदी रीतियों के विषय में यूहन्ना की टिप्पणियां ऐसे श्रोताओं की ओर संकेत करती हैं जो फिलिस्तीन से बाहर रहते थे।

किसी भी प्राचीन स्त्रोत ने कभी यह सुझाव नहीं दिया कि एशिया माइनर के निवासियों के अपेक्षा किसी अन्य समूह के लिए इसे लिखा गया था।

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

यूहन्ना के सुसमाचार और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में एक घनिष्ठ संबंध पाया जाता है, जो एशिया माइनर की सात कलीसियाओं को लिखी गई थी।

यूहन्ना बपतिस्मादाता के अनुयायी कम से कम उस समय तक इफिसुस में थे।

2. श्रोता (21:35)

हर समय की संपूर्ण कलीसिया के लिए

यहूदी समुदाय के ऐसे सदस्यों पर विशेष ध्यान जो :

- यीशु के मसीहा होने पर विश्वास करते थे
- फिर भी अराधनालयों में अराधना करते थे
- यहूदी समुदाय के साथ संपर्क रखे हुए थे

3. तिथि (25:28)

- 85-90 ईस्वी के बीच
    - यरूशलेम और मंदिर के उस विनाश की भविष्यवाणियों का कोई उल्लेख नहीं, जो 70 ईस्वी में हुआ था
    - कलीसिया और आराधनालय के बीच तनाव बहुत अधिक था
    - अन्य तीनों सुसमाचारों के बाद लिखा गया था

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- पापीरस 52
    - रीलैंड्स पापीरस
    - यूहन्ना 18 का एक भाग भी समाहित है
    - 100 से 150 ईस्वी के बीच
- सबसे अंतिम संभावित तिथि 90 या 100 ईस्वी

4. उद्देश्य (30:15)

इस धारणा की पुष्टि करना कि यीशु, मसीह भी है और परमेश्वर का पुत्र भी।

III. संरचना और विषयवस्तु (35:06)

यूहन्ना 1:10-14

- यीशु इस जगत में आया
- वह अपने ही लोगों द्वारा ठुकराया गया
- कुछ ने उसे स्वीकार किया और उस पर विश्वास किया
- वे विश्वासी यीशु के गवाह बन गए

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

A. परिचय (37:17)

- परमेश्वर का वह वचन : यूहन्ना 1:1-3
- यीशु अंधकार से भरे जगत में आया : यूहन्ना 1:4-5
- यीशु के देहधारण ने उसकी महिमा को प्रकट किया : यूहन्ना 1:14

B. यीशु की सार्वजनिक सेवा (38:31)

1. सेवकाई के लिए तैयारी (39:35)

- यूहन्ना बपतिस्मादाता : 1:19-36
- पहले चेलों का बुलाया जाना: 1:37-51
    - रब्बी : 1:38
    - मसीहा : 1:41
    - जिसके बारे में मूसा ने लिखा था : 1:45
    - परमेश्वर का पुत्र / इस्राएल का राजा : 1:49
    - मनुष्य का पुत्र : 1:51
- पहला चमत्कार : 2:1-12
    - एक चिह्न जिसने यीशु की महिमा प्रकट की
    - चिह्न यीशु को मसी” और परमेश्वर के पुत्” के रूप में पहचानते हैं।

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. पहला फसह (44:01)

- मंदिर को शुद्ध करना : 2:13-25
- निकुदिमस : 3:1-21
- यूहन्ना बपतिस्मादाता : 3:22-36
- सामरी स्त्री : 4:1-42
- एक बालक को चंगा करना : 4:43-54

पहले फसह के खंड में जो महत्वपूर्ण विषय बार-बार पाया जाता है वह है विश्वास।

3. बेनाम पर्व (51:06)

- सब्त के दिन चंगाई : 5:1-15
- यीशु का प्रत्युत्तर : 5:16-47

4. दूसरा फसह (51:45)

- पांच हजार लोगों को भोजन कराना : 6:1-15
- पानी पर चलना : 6:16-24
- स्वर्ग की रोटी : 6:25-71

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. **झोपड़ियों का पर्व (53:04)**

- शामिल हुआ और उसे पूरा किया : 7:1-52
- सच्चा पुत्रत्व : 8:12-59
- अंधे व्यक्ति को चंगा करना : 9:1-42
- अच्छा चरवाहा : 10:1-21

6. **समर्पण का पर्व (55:12)**

- शामिल हुआ और उसे पूरा किया : 10:22-40
- लाजर का पुनरुत्थान : 11:1-57

7. **तीसरा फसह (57:39)**

- गाड़े जाने के लिए अभिषेक : 12:1-11
- विजयी प्रवेश : 12:12-19
- सार्वजनिक रूप से घोषणा : 12:20-50

C. **यीशु की व्यक्तिगत सेवकाई (59:04)**

1. **प्रभु-भोज (1:00:33)**

- सेवा : 13:1-30

जब यीशु ने विनम्रतापूर्वक अपने चेलों के पार धोए तो उसने पृथ्वी पर की अपनी पूरी सेवकाई का संकेत दिया।

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- शांति : 13:31-14:31

  यीशु ने अपने विश्वासयोग्य चेलों को इस बात के लिए तैयार किया कि वह जल्द ही उन्हें छोड़कर चला जाएगा।

- तैयारी : 15:1-16:33

  यीशु ने चेलों को अपने प्रस्थान और उनकी भावी सेवकाइयों के लिए तैयार किया।

- प्रार्थना : 17:1-26

  यीशु ने याजकीय रूप में अपने अनुयायियों के लिए प्रार्थना की।

2. मृत्यु और पुनरुत्थान (1:09:00)

यूहन्ना के सुसमाचार में यीशु की मृत्यु और पुरुत्थान और उससे जुड़ी घटनाओं को प्रायः यीशु की महिमा की घड़ी के रूप दर्शाया जाता है।

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- गिरफ्तारी और मुकद्दमें : 18:1-19:17
    - गिरफ्तारी : 18:1-11
    - काइफा के सामने पूछताछ : 18:12-27
    - पिलातुस के सामने पूछताछ : 18:28-19:16
- क्रूसीकरण : 19:16-37

  यीशु को कोई आश्चर्य नहीं हुआ; सब कुछ परमेश्वर की योजना के अनुसार हुआ।

- पुनरुत्थान : 20:1-31
    - खाली कब्र: 20:1-9
    - प्रकटीकरण : 20:10-31

D. निष्कर्ष (1:17:54)

- झील पर प्रकटीकरण: 21:1-14

- पतरस को पुनर्स्थापित करना : 21:15-23

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

IV. मुख्य विषय (1:20:55)

A. विश्वास करना (1:21:41)

विश्वास करना : “स्वीकार करना,” “आना” और “जानना” जैसे शब्दों से संबंधित।

हृदय-परिवर्तन : परमेश्वर की संतान बनना और अनंत जीवन प्राप्त करना

कुछ अनुच्छेदों में “विश्वास करना” सतही विश्वास को दिखाता है — “अस्थाई” या “पाखंडी” विश्वास।

B. मसीह (1:25:05)

“मसीह” या “मसीहा” शब्द “इस्राएल के राजा” का समानार्थी बन गया था।

इस्राएल के राजा के रूप में यीशु ने हर रूप में इस्राएल का प्रतिनिधित्व किया और उनका स्थानापन्न एवं उनके लिए परमेश्वर की आशिषों का माध्यम दोनों बन गया।

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

यीशु ने वह सब पूरा किया और उसमें सफल रहा जो परमेश्वर ने इस्राएल को बनने करने के लिए बुलाया था।

1. मंदिर (1:28:33)

यीशु परमेश्वर के तम्बू और मंदिर के पुराने नियम के विषय को पूरा करता है।

वह स्थान जहाँ परमेश्वर ने अपने लोगों के साथ एक विशेष रूप से उपस्थित होने की प्रतिज्ञा की थी।

परमेश्वर की उपस्थिति का प्रकटीकरण : ऐसे समय जब परमेश्वर ने किन्हीं विशेष स्थानों में अपनी उपस्थिति को दर्शाया

परमेश्वर ने अपनी विशेष उपस्थिति को पहले तम्बू के साथ जोड़ा और फिर बाद में मंदिर के साथ।

यीशु अब परमेश्वर की उसी विशेष उपस्थिति तक हमारी पहुँच स्थापित कर रहा था।

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

देहिक तौर पर यीशु के पृथ्वी पर उपस्थित नहीं होने के बाद भी उसके अनुयायी परमेश्वर की विशेष उपस्थिति का आनंद लेंगे।

2. पर्व (1:35:15)

यीशु ने इस्राएल के पर्वों के महत्व को पूरा किया।

परमेश्वर ने लिए इन पर्वों को स्थापित किया था :

- इस्राएल को राजकीय याजकपद प्रदान करने के लिए

- तम्बू एवं मंदिर में उसकी विशेष उपस्थिति की आशिषों का आनंद लेने के लिए

  - फसह का पर्व :

  - झोंपड़ियों का पर्व :

  - समर्पण का पर्व :

3. व्यवस्था (1:40:12)

व्यवस्था सच्चे विश्वासियों को परमेश्वर की आशिषों की ओर अगुवाई करने के लिए दी गई थी।

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

व्यवस्था ने सदैव अपने से परे यीशु की ओर संकेत किया।

C. परमेश्वर का पुत्र (1:46:59)

1. दैवीय (1:48:10)

- पुत्र और पिता के बीच संबंध

- “मैं हूँ”

2. मानवीय (1:53:17)

“परमेश्वर का पुत्र” शब्द-समूह का प्रयोग उस मानवीय राजा के लिए किया जाता था जो इस्राएल के राजा के रूप में दाऊद के सिंहासन पर बैठता था।

- परमेश्वर का पुत्र

- यहूदियों का राजा

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

D. जीवन (1:54:57)

अनंत जीवन परमेश्वर के साथ एक संबंध है— हमारे जीवनों में उसकी उपस्थिति और सहभागिता का व्यक्तिगत अनुभव।

अनंत जीवन : दैवीय दंड से अनंत आनंद और शांति में लेकर जाने का छुटकारे का दान।

यीशु : सृष्टिकर्त्ता और जीवन का स्त्रोत है, उसके पास जीवन के शब्द हैं और “एकमात्र परमेश्वर है”।

V. उपसंहार (2:00:31)

यीशु परमेश्वर की आशीष की सारी प्रतिज्ञाओं की पूर्णता है।

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. हम कैसे जानते हैं कि प्रेरित यूहन्ना ने यूहन्ना रचित सुसमाचार लिखा था?

2. यूहन्ना का सुसमाचार लिखने का क्या उद्देश्य था?

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. यूहन्ना 1 में, यूहन्ना ने सारे सुसमाचार को कैसे सारगर्भित किया?

4. जब यीशु ने अपनी सार्वजनिक सेवा को आरंभ किया तो उसके अपने लोगों ने उससे किस प्रकार व्यवहार किया?

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. यीशु की व्यक्तिगत सेवा के समय कौनसी घटनाएं घटीं?

6. यीशु की सेवकाई के निष्कर्ष ने किस बात की पुष्टि की?

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. विश्वास करने का विषय यूहन्ना के सुसमाचार के लिए इतना महत्वपूर्ण क्यों है?

8. किस प्रकार यीशु इस्राएल के साथ की गई परमेश्वर की प्राचीन प्रतिज्ञाओं की पूर्णता था?

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

9. किस प्रकार परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु की पहचान मसीह के रूप में उसकी पहचान के समान है?

10. अनंत जीवन क्या है?

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. यह जानना कि यूहन्ना ने ही यूहन्ना रचित सुसमाचार लिखा है, हमारे इसके पढने के तरीके को कैसे प्रभावित करता है?
2. यूहन्ना के सुसमाचार का उद्देश्य हमारे जीवन जीने के तरीके को किस प्रकार प्रभावित करना चाहिए?
3. किस प्रकार यीशु के अंतिम वार्तालाप आपके जीवन पर लागू होते हैं?
4. किस प्रकार यूहन्ना का सुसमाचार दूसरे सुसमाचारों को पढने के हमारे तरीके को प्रभावित करता है?
5. हमें यह जानते हुए किस प्रकार जीना चाहिए कि यीशु ने चमत्कारिक रूप से हमारे जीवनों को बदल दिया है?
6. यीशु के पुनरुत्थान और पुनरागमन के प्रकाश में हमें कैसे जीना चाहिए?
7. यीशु की महायाजकीय प्रार्थना से हम कैसा प्रोत्साहन प्राप्त करते हैं?
8. यह जानना क्यों महत्वपूर्ण है कि क्रूस की मृत्यु सहने की इच्छा स्वयं यीशु की थी?
9. यीशु के पुनरुत्थान के प्रति थोमा के संदेही होने से हम क्या सीख सकते हैं?
10. हमें परमेश्वर की व्यवस्था को कैसे देखना चाहिए, यह जानते हुए कि यीशु ने इसे पूरा कर दिया है?
11. यीशु का “मैं हूँ” होना पुराने नियम और नए नियम को पढने के हमारे तरीके को किस प्रकार प्रभावित करना चाहिए?
12. हमें अनंत जीवन के दान के प्रति कैसे प्रत्युत्तर देना चाहिए जो हमें यीशु से मिला है?
13. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है?

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org